आये अवध जगतपति प्यारे

तर्ज़ :- मेरे ढोल दी चिठी कोई आई (पंजाबी)
आये अवध जगतपति प्यारे, राम रघुवंश मणि।

यज्ञ सरिंगी दा ,बहार लैके आ गया।
फलया कल्पतरु,मंगल छा गया॥
पूरे होए इकरार अज सारे - राम रघुवंश०

शेष संग शेषपति, लै अवतार आये।
जोतिषी बन शम्भु,करन दीदार आए॥
मिले इष्ट नूँ इष्ट प्यारे - राम रघुवंश०

कमल जहे नैन,मथा चंन वांगू हसदा।
शाम सिलोना राम,नूर ब्रह्माण्ड दा॥
मन मोहने बाल घुँघरारे - राम रघुवंश०

पापी पारखंडी सब डोले घबराये ने।
मुके दुःख धरती दे, देव हरषाये ने॥
चन सूरज चमकन तारे - राम रघुवंश०

करके दीदार अज ,बिगड़ी संवार लौ।
तपदे अशांत मन ,कर ठण्डे ठार लौ॥
मुखों बोल "मधुप" जय जयकारे - राम रघुवंश०।

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33443/title/Aaye-avadh-jagatpati-pyare

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |